नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :04.01.2020

प्रकाशनार्थ – 1

तकनीकी सत्र

(भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का तृतीय सत्र : मुक्त परिचर्चा)

500 वर्षों के वाह्य आक्रमणों को झेलते हुए भारतीय संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है। इससे बड़ा उदाहरण और कुछ नहीं हो सकता है। इसे जानने के लिए किसी संग्रहालय में जाने की आवश्यकता नहीं है। यह अपने आप में पूर्ण रूप से प्रदर्शित है। यह बातें तृतीय तकनीकी सत्र मुक्त परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए इतिहास विभाग के पूव अध्यक्ष, आचार्य हिमांशु चतुर्वेदी ने कही। आपने बताया कि भारतीय संस्कृति का प्रसार जहाँ भी हुआ वहाँ सद्भावना का फैलाव हुआ। भारतीय संस्कृति में जेहाद और क्रूसेज का कोई स्थान नहीं है साथ ही इस संस्कृति में सेकुलेरिज्म और टॉलरेंस का भी कोई स्थान नहीं है। आज भी संपूण विश्व में बाहर रहने वालों में सबसे अधिक भारतीय हैं, जो संस्कृति के प्रसार के संवाहक हैं।

डॉ. धर्मचन्द चौबे ने कहा कि चीनी राजा भिंटी ने सपने में देखा एक सफेद हाथी राज्य में प्रवेश कर रहा है, जिसका विश्लेषण करते हुए रेक्लस ने बताया कि इस राज्य में बुद्ध प्रवेश करना चाहते हैं। 57 ई. में राज भिंटी ने खेतान से दो बौद्ध भिक्षुओं को अपने राज्य में बुलाया। आज भी चीन में दो सफेद घोड़ों की प्रतिमा बनी है जो उन दो भारतीय भिक्षुओं की याद दिलाती हैं। 1902 में रविन्द्र नाथ टैगोर ने चीन यात्रा के समय वहाँ भारतीय संस्कृति के प्रवाह को रेखांकित किया है। उस समय एक चीनी शिक्षक ने उन्हें व्याख्यान में बताया कि पहले चीन में पंचस्वरीय संगीत था। जबकि भारत से सम्पर्क होने के पश्चात सप्तनाद संगीत की शुरूआत हुई। यद्यपि भारत में धर्म, दर्शन, आध्यात्म एवं संस्कृति का प्रसार हुआ तो उस समय चीन में उद्यम का विकास हुआ। 11वीं सदी तक चीन में मात्र तीन लोगों भूत, सिंह एवं बुद्ध आदि की उपासना होती थी। एशिया में भारत और चीन को जुड़वा भाई कहा गया है। यदि हिमालय को हटाया जा सके तो भारत और चीन एक देश होंगे।

डॉ. राजेश नायक ने बताया कि भारतीय संस्कृति का प्रसार न केवल दक्षिण–पूर्व ऐशिया बल्कि पश्चिमी देशों में भी दिखाई देती है। जो आज भी विद्यमान है। जावा में आज भी भारतीय संस्कृति के तत्व मौजूद हैं वहाँ किसी कार्यक्रम की शुरूआत अस्सलाम वालेकुम से आरम्भ होकर ऊँ नमः शिवाय से समाप्त होती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति आज भी मारीशस में विद्यमान हैं। वहाँ लोग हिन्दी में बात करना पसन्द करते हैं। पैर छूना, यज्ञोपवीत पहनना और तिलक लगाना दक्षिण–पूर्व एशिया में आज भी प्रचलित है।

डॉ. मनोज तिवारी ने बताया कि भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा से अभिप्रेरित है। प्राचीन काल में भारत का सांस्कृतिक प्रसार अशोक के काल से राजकीय संरक्षण में प्रारम्भ हुआ। अनेक

सूफियों की रचनाओं में भारतीय सस्कृति के तत्व विद्यमान हैं। आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहुँचाकर प्राचीन परम्परा को पुनर्जीवित किया एवं आगे बढ़ाया।

डॉ. अम्बिका तिवारी ने बताया कि भारतीय संस्कृति को बचाने हेतु भारतीयों को स्वयं आगे आना होगा। हम केवल अपनी संस्कृति पर गर्व करते हैं परन्तु उसके संरक्षण पर कार्य नहीं करते। यही कारण है कि हमारी संस्कृति विकृत हो रही है। जहाँ विश्व के अनेकानेक देश इसकी महत्ता को समझ रहे हैं। वहीं हम भारतीय लोग इसे आत्मसात करने से बचते हैं।

विशेष व्याख्यान

समानान्तर तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत विशेष व्याख्यान कार्यक्रम में महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने **योग और महायोगी गोरक्षनाथ** विषय पर व्याख्यान में कहा कि विश्व के विभिन्न प्रपंचों में उलझा हुआ मानव सुख–शान्ति की खोज में निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इन सुख और शान्ति की प्राप्ति के लिए इन विविध पंथ और संप्रदायों ने अनेक साधनाओं और पद्धतियों की खोज की है। वैदिन वाडमय से लेकर देश–विदेश की प्रायः प्रत्येक भाषाओं में उपासना व साधना प्रणालियों में सर्वत्र सभी क्षेत्रों में योग–विद्या के महत्व को स्वीकार किया गया है। योग हमारे देश की अमूल्य धरोहर एवं विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की देन है। महायोगी गोरखनाथ ने अपनी हठयोग साधना के अन्तर्गत अष्टांग योग के प्रथम दो अंगों यम और नियम को मनुष्य के चरित्र निर्माण का सर्वमान्य साधन माना है।

(भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का चतुर्थ तकनीकी सत्र)

ऐशिया की चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत ने यूरोप का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करने वाले यूनान पर अमिट छाप छोड़ने का सफल प्रयास किया। जब दो संस्कृतियां संपर्क में आती हैं तब दोनों एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। यह बातें चतुथ तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 राजवन्त राव ने कही। अपने व्याख्यान में डॉ0 राव ने बताया कि सिकन्दर के साथ आने वाले यूनानी लेखक, विद्वान एवं इतिहासकारों ने भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्वों को अपने साथ यूनान ले जाने का कार्य किया, जिससे वहाँ इन संस्कृतियों का प्रचार हुआ। भारतीय नैतिकता का देवता ऋत्त के दैवीय तत्व निश्चित रूप से यूनानी देवता डीके में दिखाई देता है। जो यूनानी समाज में धर्म न्याय एवं नैत्तिकता का देवता है। भारतीय जातक कथा और युनानी इसोप कथाओं में साम्यता दिखाई देती है। जैन धर्म के स्यादवाद का प्रभाव यूरोपीय संशयवाद पर भी निश्चित रूप से देखा जा सकता है। मुद्राशास्त्र के इतिहास में यवन शासक आग्थाक्लीन की मुद्रा पर वासुदेव संकर्षण एवं मिनेण्डर की मुद्रा पर गदा एवं चक्र का अंकन निश्चित रूप से भारतीय धर्म दर्शन को प्रस्तुत करता है। आग्थाक्लीज की तक्षशिला से प्राप्त मुद्राओं पर भी भारतीय धार्मिक प्रतीक चिन्ह देखे जा सकते हैं। साथ ही प्रो. राव ने कहा कि ज्यूलेट सीजर की रचना में उल्लिखित शब्दों को भारतीय दृष्टि से देखने पर उसे यहाँ की संस्कृति का संवाहक माना जा सकता है।

सहअध्यक्ष प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी ने बताया कि प्राचीन भारत में अशोक, कनिष्क जैसे अनेक शासकों ने भारतीय संस्कृति को देश के बाहर प्रचारित करने का कार्य किया। दक्षिण–पूर्व एशिया के अनेक लोकपरम्पराओं में भारतीय तत्वों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन देशों में अनेक शहरों व

स्थानों का नाम पर भारतीय प्रभाव दिखाई देता है। इसके साथ ही बौद्ध धर्म में लगभग संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति को प्रसारित करने का कार्य किया।

विषय विशेषज्ञ डॉ. राकेश कुमार सिन्हा ने चतुर्थ तकनीकी सत्र में वाचित शोध पत्रों का मूल्यांकन कर प्रस्तुत कर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया। इस तकनीकी सत्र में कुल तीन शोधपत्र पढ़े गये जिन्हें क्रमशः डॉ. कन्हैया सिंह (नेपाल में दान परम्परा), प्रमिला द्विवेदी (भारतीय संस्कृति के प्रसार में नाथ पंथ का योगदान) तथा डॉ. ब्रजेश कुमार पाण्डेय (पश्चिम एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार) विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन डॉ. राजेश कुमार सिंह एवं प्रतिवेदन डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत किया।

(समानान्तर चतुर्थ तकनीकी सत्र)

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' शीर्षक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का चतुर्थ एवं अंतिम तकनीकी सत्र दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 विपुला दूबे की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. विपुला दूबे जी ने भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार के कारक के रूप में भारत की दानशीलता की प्रवृति को प्रमुखता से उभारा जिसके चलते भारतीय संस्कृति की विदेशों में स्वीकार्यता बढ़ी। उन्होंने भारतीय संस्कृति की दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में प्रसार को प्रमाणों के साथ विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने अभिलेखों की संस्कृत भाषा, ब्राह्मी लिपि, काव्यात्मक शैली तथा मन्दिर निर्माण, तुलादान, गोदान जैसी परम्पराओं का संदर्भ देकर चम्पा, कम्बोज आदि क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट किया। इसके अलावा राजाओं एवं स्थानों के नाम पर भारतीय प्रभाव को भी उन्होने भारतीय संस्कृति प्रसार के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया।

सहअध्यक्ष प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे ने व्यापारिक संबंधों, विजयों तथा धर्म के माध्यम से भारतीय संस्कृति के विदेशों में प्रसार का उल्लेख किया। उन्होंनें विशेष रूप से तिब्बती लामा परम्परा को शैव पंथ की सिद्ध परम्परा से प्रेरित बताते हुए उसके मूल में भारतीय संस्कृति की भूमिका को स्वीकार किया। विषय विशेषज्ञ डॉ. धर्मचन्द चौबे ने चीन के विशेष संदर्भ में भारतीय संस्कृति के प्रसार को रेखांकित करते हुए चीन की प्राचीन संस्कृति में भारतीय तत्वों को सामने लाने का सफल प्रयास किया। इसके साथ ही उन्होनें यूरो केन्द्रित अध्ययन एवं शोध के स्थान पर एशिया केन्द्रित शोध एवं अध्ययन की वकालत की। दूसरे विषय विशेषज्ञ डॉ. ध्रुव कमार ने बुद्ध के मध्यम मार्ग पर प्रकाश डालते हुए उसके वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर बल दिया।

इस तकनीकी सत्र में कुल 3 शोधपत्रों का वाचन किया गया। डॉ. अंजना राय ने 'दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार–नाथ पंथ के विशेष संदर्भ में', डॉ. इक्ष्वाकु सिंह ने 'विश्व शान्ति के लिए बुद्ध देशना की प्रासंगिकता' तथा डॉ. धर्मचन्द चौबे ने 'भारतीय संस्कृति का विश्व संचार–चीनी अध्याय' शीर्षक शोधपत्र प्रस्तुत किये। आयोजन समिति के सदस्य डॉ. अजय कुमार सिंह ने संगोष्ठी की प्रासंगिकता पर संक्षेप में अपने विचार रखे। सत्र का संचालन डॉ. सचिन राय ने किया जबकि प्रतिवेदन डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया।

(डॉ. राहुल मिश्रा)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी